PRIME MINISTER (DR. MANMOHAN SINGH): Hon. Chairman, Sir, I rise to associate myself with the warm sentiments expressed by so many hon. Members at a moment we part from several of our esteemed colleagues, who complete their tenures after fruitful years of service to the nation in this august House. Sir, the list of Members retiring in the near future is a long one and it is a representative sample of the many political parties in this House and of the States of our Union. It includes a number of distinguished parliamentarians who have served as Ministers as well as many colleagues whose contribution to setting a high standard of debate has been exemplary. Indeed, I have had the privilege of participating in debates involving many of these distinguished colleagues earlier. Sir, although it is said that we are bidding farewell to hon. Members who are retiring, I am confident that many of our colleagues will be contesting elections for a fresh term. To them I would only say that I welcome a further opportunity to meet on the floor of this august House. As for those colleagues and friends who may retrun to the service of the nation in different capacities while they may be leaving this House, I am certain that they do not do so to retire from public life. Ours is not a profession; it is a vocation and for many colleagues it is a calling, an opportunity, to work for our people. My interaction with all of you has shown me that irrespective of the nature of out debates, we have put the interest of our country first to serve our people. Therefore, for all of us, there can be no question of retirement from public service. Therefore, to all the colleagues and friends whose tenure will soon be complete. I wish you every success in the future. Thank you, very much.

## VALEDICTORY REMARKS

MR. CHAIRMAN: Hon. Members, we come to the end of this Session which had commenced on Friday, the 4th of June 2004. This 21st Session of Rajya Sabha was its first one after constitution of the 14th Lok Sabha and formation of the new UPA Government. It is a matter of great happiness and honour for this House that its one Member has become Prime Minister of the country and is now the Leader of the House. We extend our heartiest felicitations to him.

In this Session, 12 newly elected Members joined the House I am sure they would make rich and valuable contribution to the House.

On the first day of the Session, obituary references were made with regard to the passing away of two sitting and three former Members of this House. A reference to the victims of the 23rd May IED blast in Jammu and Kashmir was also made.

The Hon, President addressed the Joint Session of both the Houses of Parliament on June 7. After laying the President's Address in the House, the Motion of Thanks on the Address was taken up. Unfortunately, the normal business of discussion on the President's Address could not take place despite the best of attempts and efforts. I am sure all of us are deeply concerned about our often-reiterated commitment to ensure effective functioning and conduct of business of the House. I urge all of you to seriously ponder and introspect as to how best we resolve conflicts and overcome situations of obstructions and interruptions. Let us through dialogue and building up mutual trust and understanding, find ways for smooth functioning of the House without having the need for interruptions or adjournments. All of us have an obligation to strengthen our democrarcy and uphold the dignity and prestige of this August House. I do hope the heat of the summer will be over soon, and by the time we meet again in the Monsoon Session. the environment would have turned pleasant and full of harmony and understanding.

I take this opportunity to thank the Leader of the House, the Leader of the Opposition, Leaders of various Parties and Groups, and all the hon. Members for their kind cooperation. I also thank the Deputy Chairman, Members on the panel of Vice-Chairman and the staff of the Secretariat for their help and cooperation.

Before we adjourn, I extend to all of you my hearty greetings and good wishes for the forthcoming festivals and auspicious occasions ahead.

THE LEADER OF THE OPPOSITION (SHRI JASWANT SINGH): Mr. Chairman, Sir, this was a very short Session, marking a stormy beginning and a stormy end and I hope very much not a stormy continuity. It marks the beginning of a new Government in office and we have wished them well. It also marks the termination of the term of about one-third of our Members. So, in many ways, Sir, it was a unique Session, in the beginning, in the end, being short, and we now adjourn for the arrival of the

monsoons and renewal of the House, and I must express my gratitude to you, sir, to the Deputy Chairman, to my colleagues in the Government now and the Leader of the House, as also all the officials for the short Session and for their cooperation. Thank you.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Sir, thank you very much for giving me this opportunity, may be, for the last time, may not be for the last time, who knows the future! But I must once again thank all the Members of the Parliament. You have been extremely cooperative in allowing me to perform my duties, and in performing my duties, if in any way, I have not been able to come up to your expectations, you must excuse me because the constrain of time was the only consideration, and as Mr. Santosh Bagrodia said I even used to push him to get the Bills and the legislations enacted. This is part of the occupational hazards to be in the Chair. Thank you very much for your cooperation. It is a great experience even today when all the Members were so emotional in expressing their views, and I thank all those Members who said some very kind words for me. Thank you very much.

†संसदीय कार्य मंत्री और शहरी विकास मंत्री (श्री गुलाम नबी आज़ाद): माननीय चेयरमैन साहब, इस सदन में देश की वे तमाम हस्तियां रही हैं जिन्होंने हमको आजादी दिलाई और आज उन्हीं की वजह से इस लोकतंत्र में, डेमोक्रेसी में देश के सभी क्षेत्रों से, सभी भागों से, सभी जातियों से, सभी धर्मों से इसमें हम अपनी भवना रखते हैं। उनके प्रति, उनकों हमेशा हम भूल जाते हैं। मैं एक शेर से उन्हें याद करना चाहता हूं:-

''तेरे बाद अंधेरा रहेगा महफिल में, बहुत चिराग जलाओगे रोशनी के लिए।''

हमने कितने चिराग जलाए लेकिन फिर भी उतनी रोशनी नहीं होती जितनी बहुत कम लोगों ने इस देश को दी थी। यह एक ऐसा सदन है जिसमें दुनिया के सबसे बड़े ताकतवर, हिन्दुस्तान के सबसे बड़े पूंजीपित, सबसे बड़े उद्योगपित, चाहे फिल्म इंडस्ट्री के हमारे साथी हैं, उनका चाहे कितना भी नाम हो लेकिन वे भी यहां आने के लिए तरसते हैं। यह गौरव की बात है कि हम सब जो आज यहां मौजूद हैं, हम सबको अपने—अपने दलों की तरफ से यहा आने का मौका मिला है। दुनिया की नज़रे हम पर हैं। मेरे ख्याल में जो लोग रिटायर हुए है और जो होने वाले हैं—यह दुनिया है, यहां एक दफा जो जन्म लेता है, उसको वापस जाना ही है—इसी तरह से यह राजनीति है, यह पार्लियामेंट है, एक दुफा यहां चुनकर आना है तो रिटायर भी जरूर होना है लेकिन इस बात का हम जरूर ध्यान रखें। कि हजारों—करोड़ों लोगों की निगाहें हम पर लगी हुई हैं। वे जब हमको चुनकर भेजते हैं तो खास तौर से इस टेलीविजन के जमाने में लोगों की नजरे हम पर हैं कि जिन लोगों को

<sup>†</sup>Transliteration of Urdu Script.

हमने चुनकर भेजा है, वे हमारे लिए क्या कर रहे हैं। गरीब, किसान मजबूर, दलित, अल्पसंख्यक और करोड़ों की संख्या में पढ़े-लिखे नौजवान, युवक और युवितयां जो काम मांगते हैं, रोजगार मांगते हैं, वे हमारी तरफ नज़रें बिछाए हैं कि हम उनके लिए क्या कर रहे हैं। इसलिए हमें जहां अपनी छवि ठीक करनी है, वहां हमें पूरे हिन्दुस्तान के लोगों के लिए एक मिसाल भी बनना है। मेरा ख्याल है कि हम इस सदन में कभी इस पर भी विचार करें कि हमकों अलग-अलग पार्टियों से संबंध रखते हुए भी कैसे आगें चलना है और वे कौन से मुद्दे हैं, जिन पर हमें मनमुखव दूर करना है और किस सीमा तक हमें जाना है।

सभापित महोदय, आज से चार-पांच साल पहले मैंने उस तरफ से भाषण किया था कि हम बड़े नाराज होते हैं, खफा होते हैं जब अखबारों में हमारे लिए कुछ छपता है। जब मैं ''हम'' कहता हूं तो उसमें सभी पार्लियामेंटेरियन शामिल हैं, उसमें मैं केवल विपक्ष और सत्ताधारी पक्ष की बात नहीं करता हूं। हम नाराज़ होते हैं अगर हमारी छवि पर कोई आंच आती हैं लेकिन मैं कहता हूं कि हमारी छवि हम खुद बरबाद करते हैं, दूसरे नहीं बरबाद करते हैं। इधर वाले उन पर आरोप लगाते हैं उधर वाले हम पर आरोप लगाते हैं और इसलिए मैं कहना चाहूंगा कि—

''मेरा अज्म इतना बुलंद है कि पराए शोलों का डर नहीं,

मुझे खौफ है आतिशे-गुल से कि यही चमन को जला न दे।''

हम खुद एक-दूसरे के लिए चिंगारी हैं, आतिश हैं, तूफान हैं। हम एक-दूसरे को खुद मिटाते हैं, कोई बाहर वाला हमकों मिटा नहीं सकता। इसके लिए भी हमको सोचना हैं कि हम एक-दूसरे की छवि को मिटाएं नहीं, बल्कि बनाएं। हम विचारों पर बोल सकते हैं, हम नीतियों पर बोल सकते हैं, हम प्रोग्रामों पर बोल सकते हैं लेकिन एक-दूसरे को नष्ट करने का जो प्रोग्राम हम बनाते हैं, उसमें हम खुद अपने आप ही जल जाते हैं, खुद ही मर जाते हैं।

माननीय चेयरमैन साहब, आज हमें आपके विचार सुनने का मौका मिला। जब आप मुख्यमंत्री थे, तब भी हमारी बात होती थी, हमारे बहुत से विचार आपस में मिलते हैं। इस सिलसिले में आपके नेतृत्व में हमको करम करना होगा और कोई समाधान निकालना होगा।

सभापित जी, जहां तक रिटायर हुए मेम्बरान का ताल्लुक है, मैं सरोज बहन की तरह नाम नहीं लूंगा क्योंकि फिर कुछ लोग नाराज़ हो जाएंगे, खफा हो जाएंगे लेकिन मैं यह कहूंगा कि सबका अपना-अपना योगदान रहा है और सबने कोशिश की है कि वह अपनी बात, अपनी कांस्टीटयुऐंसी की बात अपने लोगों की बात आपके सामने रखें। मैं इतना ही कहूंगा कि वह कोई गया हुआ वक्त नहीं है कि दोबारा लौटकर न आएं। हमारे मेंबर्स ऑफ पार्लियामेंट तो ऐसे सितारे हैं कि इधर डूबे तो उधर निकले। कभी-कभी इस हाऊस में डूबे तो उस हाऊस में निकले और उस हाऊस में डूबे तो इस हाऊस में निकले और उस हाऊस में डूबे तो इस हाऊस में निकले

है कि यह सिलसिला जारी रहेगा। निराश होने की जरूरत नहीं हैं। हम सब मिलकर जहां-जहां भी जाएंगे, उस चिराग को जलाते रहेंगे। वह सदन हो या सदन के बाहर हो वह चिराग है लोकतंत्र को जिन्दा रखना, वह चिराग है देश की एकता और अंखडता को जिन्दा रखना, वह चिराग है रिश की एकता और अंखडता को जिन्दा रखना, वह चिराग है गरीबों की सेवा करना। हम चाहे किसी भी जगह हों, किसी पोजिशन में हों उस चिराग को हमें जलाए रखना है। माननीय सभापित महोदय, मैं आपका बहुत-बहुत आभार प्रकट करता हूं कि जिस लगन से आपने हमें लीडरिशप दी है पिछले कुछ सालों से इस सदन में, हमें किसी को यह महसूस नहीं होता है और जिस तरह से घर का एक बुजुर्ग होता है तो हर इंसान की आशा होती है कि मैं बुजुर्ग के पास जाऊंगा, बड़े के पास जाऊंगा अगर मुझसे कोई अन्याय हुआ है तो उसकों दूर करना है। चाहे हम विपक्ष में रहे या इस सत्ता में, सभी को आप पर विश्वास और भरोसा है। डिप्टी चेयरमेन साहिबा का भी मैं धन्यवाद करता हूं कि बहुत लम्बे अरसे तक आपने यहां डिप्टी चेयरमेनशिप की। उसके लिए डिप्टी चेयरपर्सन, आपका बहुत-बहुत आभार प्रकट करता हूं, आपकों बहुत बधाई देता हूं। जहां तक हमारे लीडर ऑफ दि अपोजिशन हैं, दो चीजें, पुराने लीडर ऑफ अपोजिशन में और आज के लीडर ऑफ अपोजिशन में कॉमन हैं। चाहे पार्टियां अलग हैं, सोच अलग है, विचारधारा अलग है लेकन एक चीज हमारे आज के लीडर ऑफ दि अपोजिशन में हैं और जो उस वक्त लीडर ऑफ दि अपोजिशन थे, जो कि आज माननीय प्रधान मंत्री हैं, उनके बारे में इतना ही कहूंगा कि—

''इतने शीरी हैं तेरे लब के रकीब, गालियां खाकर बेमज़ा न हुआ।''

दोनों इस लीहर ऑफ दी अपोजिशन की तरह आप तलवार भी चलाते थे और चलाते हैं लेकिन मरने वाले को यह मालूम भी नहीं कि तलवार चली या नहीं। जुबान की शालीनता, मिठास और प्यार अपनी बात कहने का जो अंदाज मनमोहन सिंह जी में था और माननीय जसवंत सिंह जी में भी यह अपने आप में एक निराली चीज हैं इसी से आप के लोग भी प्रभावित होते हैं, हम भी बहुत हद तक उससे प्रभावित होते हैं और यही बात आज भी हैं कि मनमोहन सिंह जी से भी, इसी भाषा के लिए, उसी प्रयोग के लिए आप भी प्रभावित होते यें और हम भी प्रभावित होते हैं। हमारे जो पैनल ऑफ वाइस चेयरमेन हैं उनकों भी बहुत-बहुत बधाई देता हूं, उनका भी बहुत आभार प्रकट करता हूं। हमारें व्हिए, डिप्टी लीडर, हमारें सैक्रेटरी जनरल, राज्य सभा के हमारे जितने भी आफिसर्स हैं, हमारे वाच एंड वार्ड के आफिसर्स और मीडिया के सभी साथियों का इस अवसर पर मैं बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूं कि सभी का अपने-अपने अंदाज से, अपने-अपने तरीके से इस हाउस को चलाने में सहायता मिली। बहुत-बहुत धन्यवाद।

ارت المد المداد المعالم المعا

یں دیش کے بھی شیتر دل ہے، بھی بھا گول ہے، بھی جا تیوں ہے، سبھی دھرموں ہے اس میں ہم اپنی بھا وُنار کھتے ہیں۔ ان کے برتی ،ان کو ہمیشہ ہم بھول جاتے ہیں۔ میں ایک شعرے انہیں یاد کرنا چا ہتا ہوں

## تیرے بغیر اندھیرا رھے گا محفل میں بھت چراغ جلائوگے روشنی کے لئے

ہم نے کتے چراغ جلائے کین گردی ای روش نہیں ہوتی جہتے کہ لوگوں نے اس ویش کو وی تھی۔ یہ ایک ابیاسدن ہے جس میں دنیا کے سب ہو برے طاقور، ہندستان کے سب ہو بین ہوگی پتی، سب ہو برے ادوھوگ پتی، چاہے فلم انڈسٹری کے ہمارے ساتھی ہیں، ان کا چاہے کتا بھی نام ہولیکن وہ بھی بہاں آنے کے لئے ترجة ہیں۔ یہ گورو کی بات ہے کہ ہم سب جوآت یہاں موجود ہیں، ہم سب کو اپنے اپنے وَلوں کی طرف ہے بہاں آنے کا موقعہ طاہے۔ ونیا کی نظری ہم پر ہیں۔ میرے خیال میں جونوگ ریٹائر ہوئے ہیں اور جوہونے والے ہیں، آنے کا موقعہ طاہے۔ ونیا کی نظری ہم پر ہیں۔ میرے خیال میں جونوگ ریٹائر ہوئے ہیں اور جوہونے والے ہیں، ید نیاہ ہوئے ہیں ایک وفعہ جوہتم لیتا ہے، اس کو واپس جانا ہی ہے، اک طرح سے بیرا جیتی ہے، یہ پارلیمنٹ ہے، ایک وفعہ ہوہ ہم نظری ہم پر گل ہوئی ہیں۔ وہ جب ہم کوچنگر ہیجتے ہیں تو خاص طورے اس میلی ویژن کے زمانے میں لوگوں کی لوگوں کو ہم نے چن کر بھیجا ہے، وہ ہمارے لیے کیا کررہے ہیں۔ غریب، کسان، مزدود، فلکسی ہم پر ہیں کہ جن لوگوں کو ہم نے چن کر بھیجا ہے، وہ ہمارے لیے کیا کررہے ہیں۔ غریب، کسان، مزدود، والے، آئیسی اور کروڑ وں کی شکھیا میں پڑھے کھی کو جوان، بودک اور کو تیاں جوکام ما گلتے ہیں، وزگا را گلتے ہیں، وو ہمار کے لئے کیا کررہے ہیں۔ غریب، کسان، مزدود، والی ہم میں جہاں اپنی شبید کھیک کرنی ہے، ہماری طرف نظری بھی جہاں اپنی شبید کو کو کے گئے کیا کررہے ہیں۔ اس لئے ہمیں جہاں اپنی شبید کی کی ہم میں بورے ہندستان کے لوگوں کے لئے ایک مثال بھی جنا ہے۔ میرا خیال ہے کہ ہم اس سدن میں بھی اس بور میں میں میں اس کے لئے میں میں جانا ہے۔ میرا خیال ہو گئا ہے اور دہ کون سے مدعے ہیں، بھی وجار کریں کہ ہم کو الگ الگ پارٹیوں سے سمبند ھر کھتے ہوئے بھی گئے آگے چانا ہے اور دہ کون سے مدعے ہیں، بھی میں بی ہمیں میں مثل ویک کور کے اس کے ہم میں والے ورک ورک اور می کئے آگے چانا ہے اور دہ کون سے مدعے ہیں، بھی ہم بی میں میں مثل ایک ہم ہمیں جانا ہے۔

سجائی مہودے، آج سے چار پانچ سال پہلے میں نے اس طرف سے بھاش کیا تھا کہم بڑے ناراض ہوتے ہیں، خفاہوتے ہیں جب اخباروں میں ہارے لئے کھے چھپتا ہے۔ جب میں " ہم " کہتا ہوں تواس میں بھی پارلینٹرین شامل ہیں اس میں میں میں صرف ویکش اور ست دھاری پکش کی بات نہیں کرتا ہوں۔ ہم تاراض ہوتے ہیں اگر ہماری شبید پرکوئی آئی آئی آئی ہے لیکن میں کہتا ہوں کہ ہماری شبید ہم خود برباد کرتے ہیں، ووسر نے نہیں برباد کرتے ہیں۔ اور اس لئے میں کہنا میں اور اس لئے میں کہنا ہوں کہ اور اس لئے میں کہنا ہوں کہ اور اس لئے میں کہنا ہوں کہ ہے ہیں۔ اور اس لئے میں کہنا ہوں کہ ہے ہیں کہنا ہوں کا ہے ہیں کہنا ہوں کہ ہونے کہ ہے ہیں کہنا ہوں کہ ہے ہیں کہنا ہوں کہ ہے ہیں کہنا ہوں کہ ہونے کہ ہونے کہ ہے ہیں کہنا ہوں کہ ہونے کہ ہے ہیں کہنا ہوں کہ ہونے کہ ہے ہیں کہنا ہوں کہ ہے کہ ہونے کہ ہو

میرا عزم اتنا بلند هے که پرائے شعلوں کا ڈرنھیں مجھے خوف هے آتش گُل سے که بھی چمن کو جلانه دے

ہم خود ایک دوسرے کے لئے چنگاری ہیں، آتش ہیں، طوفان ہیں۔ ہم ایک دوسرے کوخود مٹاتے ہیں، کوئی باہر والا ہم کومٹائییں سکتا۔ اس کے لئے بھی ہم کوسو چٹا ہے کہ ہم ایک دوسرے کی شبیہ کومٹائییں سکتا۔ اس کے لئے بھی ہم کوسو چٹا ہے کہ ہم ایک دوسرے بنا کیں۔ ہم وچاروں پر بول سکتے ہیں، ہم نیتیوں پر بول سکتے ہیں، ہم پروگراموں پر بول سکتے ہیں کین ایک دوسرے کونشٹ کرنے کا جو پروگرام ہم بناتے ہیں، اس میں ہم خود اپنے آپ ہی جل جاتے ہیں، خود ہی مرجاتے ہیں۔

مانے چیئر مین صاحب، آج ہمیں آپ کے و چار سنے کا موقعہ ملا۔ جب آپ مکھیہ منٹزی ہے، تب بھی ہماری بات ہوتی تھی، ہمارے بہت سے و چار آپس میں ملتے ہیں۔اس سلسلے میں آپ کی سر پرستی میں ہم کو کام کرنا ہوگااور کوئی سادھان نکالنا ہوگا۔

سجائی جی، جہاں تک ریٹائر ہوئے مہران کا تعلق ہے، ہیں سروج بہن کی طرح نام نہیں لونگا کیونکہ پھر پچھ لوگ ناراض ہوجا کیں گے، خفا ہوجا کیں گے لیکن میں بیکیوں گا کہ سب کا ابنا ابنا یو گدان رہا ہے اور سب نے کوشش کی ہے کہ دوہ اپنی بات، اپنی کانسٹی ٹوینس کی بات، اپنے لوگوں کی بات آپ کے سامنے رکھیں ۔ ہیں اتنا ہی کہوں گا کہ دو کوئی گیا ہوا دہتے نہیں ہے کہ دو بارہ لوٹ کر نہ آئے ۔ ہمار ہے مہرس آف پارلیمنٹ تو ایسے ستارے ہیں کہ اوھر ڈو بہتو اوھر فطے۔ مجھی بھی اس باؤس میں ڈو بہتو آس باؤس میں نظے اور آس باؤس میں ڈو بہتو آس باؤس میں نظے اور آس باؤس میں فو بہتو آس باؤس میں نظے اور آس باؤس میں من فو بہتو آس باؤس میں نظے اور آس باؤس میں شونے کی فو بہتو آس باؤس میں نظے اور آس باؤس میں من میں فو بہتو آس باؤس میں نظے ۔ بہتو برابر جاری رہتا آیا ہے اور جھے لگتا ہے کہ یہ سلسلہ جاری رہیگا۔ نراش ہونے کی ضرورت نہیں ہے ۔ ہم سب ملکر جہاں جہاں بھی جا نیں گے، اس چراغ کو جلاتے رہیں گے ۔ جا ہے دہ سدن ہویا میں میں ایک باہراور دہ جراغ ہے لوک شنز کوزندہ رکھنا، وہ جراغ ہے دیش کی ایک اور اکھنڈ تاکوزندہ رکھنا، وہ جراغ ہے دیش کی ایک اور اکھنڈ تاکوزندہ رکھنا، وہ جراغ ہے دیش کی ایک اور اکھنڈ تاکوزندہ رکھنا، وہ جراغ ہے دیش کی ایک اور اگر کو کہمیں جلاتے رکھنا ہے۔ میں جواب کی بھی جگہ ہوں ، کس پوزیشن میں ہوں اس جراغ کو ہمیں جلاتے رکھنا ہے۔

" فتم شد"

مانے سجایی مہودئے ، میں آپ کا بہت بہت آ بھار برکٹ کرتا ہوں کہ جس آئن سے آپ نے ہمیں لیڈرشب وی ہے پھیلے بچھسالوں سے اس سدن میں، ہمیں کی کو میصون نہیں ہوتا ہے ادر جس طرح سے گھر کا ایک بزرگ ہوتا ہے توہرانسان کی امید ہوتی ہے کہ بزرگ کے پاس جاؤں گا، بزے کے پاس جاؤنگا اگر مجھے ہے کوئی ناانسانی ہوئی ہے تواہے دور کرنا ہے۔ چاہے ہم ابوزیشن میں رہیں یااس تعین سبھی کوآپ پر وشواس اور مجروسہ ہے۔ فیٹی چیر مین صاحب کا مجھی میں دھنے ادکرتا ہول کہ بہت لیے عرصے تک آپ نے یہاں ڈیٹی چیئر مین شپ کی ۔ اس کے لئے ڈیٹی چیئر پرس آ بھا بہت بہت آ بھار برکٹ کرتا ہوں، آپ کو بہت بدھائی دیتا ہوں۔ جہاں تک مارے لیڈرآف دی الوزیش ہیں ، دو چیزیں پرانے لیڈرآف الوزیش میں اورآج کے لیڈرآف ایوزیش میں یکسال ہیں۔ جا ہے یارٹیال الگ ہیں، سوج الگ ہے، وجار دھاد االگ ہے لیکن ایک چیز ہمارے آج کے ليدرآف رى الوزيش بي اورجواس وقت ليدرآف دى الوزيش تع، جركه آج ما في يروهان منترى جي بي، ان کے بارے میں اتنابی کہوں گا کہ '' استے شیری ہیں تیرے لب کے قریب کدگالیاں کھا کر بے مزہ نہ ہوئے''۔ دونواس لیڈر آف دی ایوزیشن کی طرح آپ کموار بھی چلاتے تھے اور چلاتے جیں لیکن مرنے والے کو پیمعلوم بھی نہیں کہ تلوار چلی بانہیں۔ زبان کی شیرین، منصاب ادر پیارا نی بات کہنے کا جواندازمن موہن سکھے جی میں تھا ادر مانئے جمونت سکھ جی میں بھی بدایے آب میں ایک زالی چز ہے اور اس سے آب کے لوگ بھی ہر بھاوت و تے ہیں ہم مجی بہت حد تک اس سے پر بھاوت ہوتے ہیں اور آج بھی یمی بات ہے کہ من موہمن شکھ جی نے مجھی اس بھاشا کے لئے، اس پر بوگ کے لئے، آپ بھی پر بھاوت ہوتے تھے اور ہم بھی پر بھاوت ہوتے میں ہمارے جو پینل آف واکس چیئر مین بین ان کو بھی بہت بہت بدھائی دیتا ہوں ،ان کا بھی بہت آ بھار پر کٹ کرتا ہوں ہارے وہی، ڈیٹی لیڈر، ہمارے سکریٹری جزل، راجیہ سبائے ہمارے طبتے بھی آفیسرز میں، ہمارے واچ اینڈ وارڈ کے آ فیسرز، میڈیا کے سبحی ساتھیوں کا اس موقع پر میں بہت بہت دھنیو ادکرتا ہوں کہ سبحی کی ایپے اپنے انداز ہے، اینے اپنے طریقے ہے اس ماؤس کو جلانے میں بدو ملی ۔ بہت بہت دھنوا دیا

MR. CHAIRMAN: Now, before we adjourn the House sine die, we will have the National Song.

(The National Song, "Vande Mataram", was then played)

MR. CHAIRMAN: Now I adjourn the House sine die.

The House then adjourned sine die at fifty-nine minutes past one of the clock.